IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, September 2025
Impact Factor: 7.67

# दलित कविताओं में स्त्री विमर्श

**डॉ. रागिनी सिंह परिहार**
**आजाद नगर, उर्हहट, रीवा (म.प्र.)**

**सारांशः**

20वीं शताब्दी का छठवां 'दशक' साहित्य जगत के लिए बेहद उठा–पटक और बदलाव का समय है। यह समय ज्ञान की अवस्था के बदलाव का समय है क्योंकि समाज व संस्कृति इस समय उत्तर औद्योगिक युग और उत्तर आधुनिक युग में प्रवेश कर चुका था। यह समय महावृत्तांत के विरुद्ध का समय है जिसके कारण वह विमर्शों का उदय होता है। भारतीय समाज प्रमुखतः लिंग–भेद के आधार पर जाति के आधार पर, धर्म के आधार पर ही समाज का विभाजन करता है। चाहे हमारा संविधान कितना भी समानता और अस्पृश्यता की दूरी करने की बात करता है पर समाज का विभाजन करता है। चाहे हमारा संविधान कितना भी समानता और अस्पृश्यता को दूर करने की बात करता है पर समाज का विभाजन इन्हीं आधार पर किया जाता है।

समाज के इन ठेकेदारों का मानना है कि स्त्रियाँ घर की चारदीवारियों में, परदे में कैद ठीक लगती हैं। एक स्त्री की पहचान केवल माँ, पत्नी, बेटी के परिधि में ही सिमटी हुई है, स्त्री और निम्न जाति को मनु से लेकर अभी तक के इस लम्बे दौर में हमेशा संघर्ष करना पड़ा है। लेकिन एक स्त्री और वो भी दलित वर्ग से हो तो उसके संघर्ष से अनुमान लगाना बेहद मुश्किल है दलित स्त्री को केन्द्र में रखकर अनेक साहित्यिक रचना हुई जिसमें नारी के हीन भावना को दर्शाया गया है जिसमें शोषण जैसी घटना का भी वर्णन है।

ऐसी अनेक स्त्रियाँ हैं जिसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाए गए कई–कई बार बदनामी भी उसी की होती है। स्त्री शोषण को सहज और स्वाभाविक मान्यता के रूप में समाज के मन मस्तिष्क में बैठाने की निरंतर कोशिश की गई। समय–समय पर विभिन्न शक्तियों से गठजोड़ करके इसने अपना रूप बदला पर मौजूदगी सामन्तवादी व्यवस्था की आंतरिक संरचना में भी अनेक स्तरों पर बनी हुई है। उद्देश्य स्त्री के वास्तविक अस्तित्व और स्वप्नों का सदा के लिए दमन करना और पुरुष पूर्ण वर्चस्ववादी समाज में स्त्री के लिए समानता और न्याय की संभावनाओं को समाप्त करता रहा है। परन्तु अब वर्तमान समय में सबको बराबर का दर्जा और मान्यता प्रदान है। स्त्रियाँ भी समाज में खुलकर सांस ले रही हैं और स्वतंत्र रूप से अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं।

**मूल शब्दः–** विमर्श, अत्याचार, पितृसत्तात्मक, शोषण, वेदना, मजबूरी, आजीविका, परिवर्तनशील, क्रान्तिकारी, चेतना, अन्याय इत्यादि।

**दलित कविताओं में स्त्री–विमर्श –**

स्त्री–वमर्श के रूप में स्त्री विषय की आधुनिक चिन्ता ही माना जाता है। वस्तुतः नारी संबंधी न्यायिक, वस्तुनिष्ठ, सामाजिक और वैचारिक सोच ही स्त्री या नारी विमर्श की प्रमुख अवधारणा है। भारतीय चिन्तन परम्परा में स्त्री विषय की सोच–विचार की रस्म बहुत पुरानी है। वेद, उपनिषद और पौराणिक तथा धार्मिक ग्रन्थों में स्त्री विषयक विचार–विमर्श समय पर अभिव्यक्त किए हुए मिलते हैं। नारी क संबंध में–

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-29018

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, September 2025
Impact Factor: 7.67

**'यत्र नार्यस्तु पूज्यंत रमन्ते तत्र देवता रमन्ते,**

**यत्र तु एताः न पूज्यन्ते तत्र सर्वा क्रिया अफताः (मनुस्मृति)'**

और ये लेकर नारी माया है और यहाँ तक नारी को नरक की खान तक का विचार वैभिन्य हमारे यहाँ कहा गया है।

नारी समाज की पहली कड़ी है। हिन्दी दलित कविता में स्त्री की अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुई है। डॉ0 अम्बेडकर ने 1942 में नागपुर में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में कहा था कि ''किसी भी समाज की प्रगति का सही अन्दाजा स्त्रियों में हुई प्रगति से ही लगाया जा सकता है। आप घरों से निकलकर यहाँ तक आई निश्चित ही आप प्रगति के पथ पर हैं। आप अपने पतियों के सामाजिक कार्यों में सहयोग करें। पति की दासी नहीं मित्र बने, बच्चे कम पैदा करें और उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने पर ही, उनकी राय के अनुकूल शादियाँ करें। बेटी–बेटा दोनों को उच्च शिक्षा दे पति यदि शराब पीकर घर में घुसे तो उनके लिए घरों के दरवाजे बन्द कर दें। अधिक नहीं तो इनकी थोड़ी सी बातों पर अमल करें तो निश्चित ही आपकी प्रगति होगी।''[1]

स्त्रियों पर सदियों से पुरुष समाज द्वारा नाना प्रकार के सामाजिक बंधनों द्वारा उनका शोषण किया जाता रहा है। इस पारिवारिक अत्याचार तथा दमन के प्रति सचेत स्त्री चेतना ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिया है। स्त्रियों को उनके अपने अस्तित्व बोध ने ही विमर्श की प्रेरणा दी है। उन्हें अपने आत्म–समर्पण और पितृसत्तात्मक व्यवस्था से बाहर लाने पूरा श्रेय स्त्री विमर्श को ही जाता है। ''नारी विमर्श नारी मुक्ति से सम्बन्ध एक विचारधारा है। यह एक ऐसा विमर्श है जो नारी जीवन छुए–अनछुए पीड़ा जगत के उद्घाटन के अवसर उपलब्ध कराता है।''[2]

दलित परिवार में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं का स्तर शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ है। गरीबी, पारिवारिक, सामाजिक, वातावरण आदि समस्याओं के कारण बच्चियाँ पढ़ नहीं पातीं वह बचपन में ही घर की जिम्मेदारियों से घिरकर रह जाती हैं। अपने छोटे भाई–बहन को संभालने से लेकर परिवार को सहयोग देने के लिए वह स्वयं को भूल ही जाती है। विद्यालय जाने का भी समय नहीं निकल पाता है।

**''वह जो लकड़ी काटती**
**थापती उपले,**
**पकाती है भट्टे में ईटें**
**बनाती है बीड़ी**
**बीनती है कोयला**
**शाम के खाने के लिए**
**अब कहाँ बचा है उसके पास**
**स्कूल जाने का समय.....[3] ('चन्द्रभान' डुरादे तभी करवट लेते हैं')**

दलित कन्या जब बड़ी होती है तब वह अपने परिवार को आर्थिक सहयोग के लिए मजदूरी भी करती है। जहाँ तथाकथित काम पिपासु समाज उसे निगल लेने की चाह में रहता है। वह समाज और दबंग लोगों की भय से अमानवीय मानसिक प्रताड़ना को अपने तक ही रखती है। अपने परिवार के सलामती के लिए वह अपमान भी मौन रहकर सहती है। वह विवाहित होती है तब भी यह काम पिपासु निगाहें उसका पीछा नहीं छोड़ती। बस उस दिन की इन्तजार में रहती हैं कि कब वह लाचारी की स्थिति में आए निर्धन असहाय दलित अपने बीमार बच्चे के इलाज के लिए जब बेबस लाचार होकर ठेकेदार से मदद मांगती हैं तब इसके बदले में उसे अपना आत्मसम्मान दाव में लगाना पड़ता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, September 2025
Impact Factor: 7.67

बच्चा सच में बीमार
तप रहा था उसका बदन
चिलचिलाती धूप सा
माथे पर उभर रही थी
पसीने की बूँदें
झुमरी के पास न था पैसा
थोड़ी देर में आया था
इंजीनियर बाबू
डॉक्टर की फीस के
एवं दवा दारू के
पैसे दिखा रहा था
बदले में झुमरी को
पास में सूनी झोपड़ी में
उसी वक्त बुला रहा था
चिलचिलाती धूप
तब भी .....
पीछा कर रही थी''[4] (रेश एस टेंमेकर झुमरी)

अपने परिवार वालों की खुशहाली के लिए दलित नारियाँ कई बार शारीरिक शोषण की शिकार हो जाती हैं। वह अपनी व्यथा को जब बताती हैं ये तब समाज उसे शंका के घेरे में रखता है, उसे ही इसका दोषी मानता है।

शब्द चेतना है
शब्द अन्याय के विरुद्ध
भंवरी के न्यायिक वेदना, (कुसुम वियोगी शब्द)

कई बार दलित समाज में दलित स्त्री के त्याग, बलिदान, समर्पण एवं उसकी वेदना को समझने वाला कोई नहीं होता वह दो तरफा शोषण को सहती रहती है। दलित एवं सवर्ण समाज उसका शोषण करता है। उसकी अकाल मृत्यु पर केवल शोक व्यक्त किया जाता है। मृत्यु का कारण सभी जानते हैं, किंतु कहीं उसकी चर्चा तक नहीं की जाती हैं। सब कुछ जानकर चुप्पी साधे समाज पर कवि यहाँ व्यंग्य करता है कि–

''अभावों में फलीफूली
और पीड़ाओं ने पाली है दलिता,
चमकती सदियों से तू
अपना ही रक्त जलाकर दलिता
भले होती न हो चौक में
तेरी पूरी चर्चा या बातें,
न उनकी चुप्पी तुझे

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, September 2025
Impact Factor: 7.67

रोक पाएँगी दलिता.....'' (किरान सोसा दलिता के नाम)

कामकाजी महिला मजदूरों का शारीरिक शोषण उसके अंतर्मन को पूर्णतः चकनाचूर कर देता है। एक ओर उसका घर परिवार उससे आर्थिक सहयोग भी करता है दूसरी ओर ठेकेदार वर्ग ललचायी आँखों से निगलने की ताक में रहता है। दलितों का सम्पूर्ण जीवन संकटों में घिरा रहता है। दलित स्त्री का पति भी उसकी समस्याओं को जानते हुए कई बार नजर अंदाज करता है क्योंकि वह ठेकेदारों का विरोध करने का साहस नहीं जुटा पाता उसकी पत्नी से उसकी आजीविका जुड़ी है। वह काम न भी करे तो बच्चो की भूख मिटाने के लिए श्रम करेगी ही। गाँव में जब कोई दलित स्त्री कुएँ में कूदकर अपनी जान देती है तब–

''पति बेचारा भटक गया व
लूट गयीं आजीविक उसकी
घर में हांड़ी तक न बची थी
हाय बेचारे के जीवन की
आजादी कही और चल बसी
रोजी–रोटी, रोटी टूटी
और एक औरत की इज्जत
न कोई पेशा न मजदूरी
भूखा बच्चा भूखी जननि
रोजी खोजती रोती–रोती
भटक रही थी जो हाथ आ गयी
एक तिलकधारी
सेठ–पुत्र के हाथ लग गयीं
और मर गयी
बच्चा लिए
दो बच्चे की माँ मर गयी
कुएँ में कूद कर
भूखे पेट तड़प–तड़पकर
हर दिन हृदय में दहशत भर
राह पर गिरते चकराते
जीवन मार्ग गयीं चूक.....।
अरे मर गयी मजदूरन एक।'' (हिम्मत खाटसूरिया 'गाय मर गई, बाई मर गई')

समाज में लड़कियों पर बहुत बंधन लगाये जाते थे। श्रम और संघर्ष के बाद भी उन्हें समता–स्वतंत्रता का अधिकार नहीं मिलता था। लड़कियों के प्रति समाज में ऐसी भावना हिन्दू ग्रन्थों के आधार पर उन्हें अबला मानने के फलस्वरूप थीं। अबला नारियों को सबला बनाने की भावना नहीं थी। धर्म और आदर्श के त्याग, बलिदान, की शिक्षा के साथ उन्हें शारीरिक और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, September 2025 Impact Factor: 7.67

मानसिक रूप से हमेशा कमजोर बनाया गया। तर्क–वितर्क के अभाव में वह उचित और अनुचित भी समझ नहीं पाती थी। खुद के लिए विचार करना और निर्णय लेना कठिन था।

**हर घर पवित्रता लिए है**
**जहां नारी ऐसी होती है**
**खुद गरल को पीती रहती**
**परिजन को सुधा देती है।**

समय परिवर्तनशील है। अब दलित स्त्री शोषण और यातनाओं में जीवन नहीं जीना चाहती। वह शिक्षा प्राप्त करके शिक्षा को ही अपना हथियार बनाना चाहती है उसकी आदर्श है पहली दलित क्रान्तिकारी स्त्री सावित्री बाई फूले। सावित्री बाई ने अपना सम्पूर्ण जीवन दलित स्त्री–स्त्रियों के उद्धार में समर्पित कर दिया।

**"सावित्री बाई फूले**
**तुम्हारा जीवन था एक कसौटी**
**तुम्ही पहली शिक्षिका**
**बनी स्त्री मुक्ति की लौ**
**अभाव और कष्टों में रहकर**
**संचेतना के बीज अंकुरित किया**
**तुम भी पहली पद दलित स्त्री**
**जिसने ऊँची आवाज में**
**ब्राह्मणी समाज को दुत्कारा था**
**शूद्र अतिशूद्रों एवं स्त्री जाति के**
**मान स्वाभिमान को जगाया था। (रजनी तिलक स्त्री मुक्ति की मशाल हो)**

शिक्षा ही हर अंधकार को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश पुंज से असहायों को सक्षम बनाने का सामर्थ्य रखती है। आज वह दलित स्त्री शोषण को सहना नहीं बल्कि अन्याय के विरुद्ध लड़ना सीख गई है। स्त्री विमर्श प्रतिबद्ध है।

आज हिन्दी साहित्य दलित स्त्री विमर्श अन्य विमर्शक की तरह एक अहम हिस्सा है जिसकी सवर्ण साहित्य का स्त्री विमर्श और दलित पुरुषों का दलित विमर्श भी एक तरह से अनदेखा कर रहा था कि दलितों में दलित यानी दलित स्त्री भी समाज और साहित्य में अपना स्थान निर्धारित करने के लिए आन्दोलन कर रही है। दलित महिलाएँ अपनी लेखनी के माध्यम से अपने मुद्दों को साहित्य के केन्द्र में ला रही है।

समकालीन हिन्दी कविताओं में दलित स्त्री के जीवन में घटत यथार्थ को बड़ी सफाई से व्यक्त किया जा रहा है। सच्चाई यही है कि यदि दलित स्त्री का दर्द अनुभव करना है या जानना है तो आपको उस जिन्दगी को स्वयं महसूस करना पड़ेगा यदि ऐसा नहीं करते तो वे हकीकत न होकर केवल लोगों का साधन बनकर रह जायेगा।

**निष्कर्ष –**

अंततः यह कहा जा सकता है कि दलित कविताओं में स्त्रियों का विमर्श परिवर्तन कामी साहित्य है, जो प्रत्येक व्यक्ति के गरिमामयी व्यक्तित्व और समाज में समता एवं बंधुता के लिए कृतसंकल्प है। इन सभी रूढ़िवादी व्यवस्थाओं और सदियों से

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, September 2025 Impact Factor: 7.67

चल रहे सुनियोजित शोषण, उत्पीड़न के विरुद्ध विश्व भर के वैचारिक चिन्तन में विमर्श ने एक नया आयाम और प्रतिप्रेक्ष्य निर्मित किया। किसी भी वर्ग की स्त्री की समस्या हो या स्त्री–विमर्श में स्त्री हमेशा से ही शोषित पीड़ित रही है और आज भी हो रही है। स्त्री शोषण को सहज और स्वाभाविक मान्यता के रूप में समाज के मन–मस्तिष्क में बैठाने की निरंतर कोशिश की गई।

समय–समय पर विभिन्न शक्तियों से गठजोड़ करके उसने अपना रूप भी बदला पर मौजूदगी सामन्तवादी व्यवस्था से लेकर पूँजीवादी और अब बाजारवादी व्यवस्था की आंतरिक संरचना में भी अनेक स्तरों पर बनी हुई है। इसका उद्देश्य स्त्री के वास्तविक अस्तित्व और स्वत्वों का सदा के लिए दमन करना और पौरुषपूर्ण वर्चस्ववादी समाज में स्त्री के लिए समानता और न्याय की संभावनाओं को समाप्तज करना रहा है।

**संदर्भ सूची –**

1. दलित साहित्य 2007–2008 जय प्रकाश कर्दम पृ0 121
2. बेइनवॉस– सं. हरीश मंगलम्– मुधुकांत कल्पित अरविन्द वेगड़ा पृ0 28–29
3. दलित साहित्य 2003 शब्द कुसुम वियोगी जयप्रकाश कर्दम पृ0 78
4. समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श– सं. श्रीराम शर्मा पृ0 90
5. बयान अगस्त 2008 सं. मोहनदास नैमिशराय पृ0 07
6. समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन सं. रजनी तिलक
7. अनुरागी; स्वराज प्रकाशन दिल्ली– 2011
8. दलित चेतना की कविताएँ– सं रामचंद्र एवं प्रवीण कुमार पृ0 87–89
9. मिट्टी की सौगंध – प्रेम कपाड़िया पृ0 08
10. दलित चेतना एक सोच सं. रमणिका गुप्ता पृ0 168